15. ईशः क्व अस्ति?

देवागारे.....दृशम्- कवीन्द्र रवीन्द्र रचित गीताञ्जलि से उद्धृत इस कविता में बताया गया है कि ईश्वर मंदिर में नहीं बसता, वह तो जहां श्रम करने वाला श्रमिक खून पसीना बहा रहा है, वहां उसके साथ खड़ा है।

तमोवृत्ते- अंधकारपूर्ण, पिहितद्वारे- बंद दरवाजे वाले देवागारे-मन्दिर में तू किस को भज रहा है, यह जय माला छोड़, गाना छोड़, यहां ईश्वर नहीं है। आंखें खोल।

तत्रास्तीश.....दारयते– ईश्वर कहां है जहां लाङ्गलिकः-कृषक, कर्षति-खेत को जोत रहा है। जनपद रथ्या कर्ता-जनता के लिए रथ्या-मार्ग कर्ता-बनाने वाला, प्रस्तरखण्डान्, पत्थर के टुकड़ों को, दारयते-तोड़ रहा है।

ईशस्तिष्ठति.....पांसुरभूमिम्– वर्षा+आतप+द्विवचनम् बरसात और धूप में, मलिनवपुः मलिनं वपुः येषां ते=मैले शरीर वाले। उनके साथ ईश्वर खड़ा है। तू अपनी शुद्धां शाटीं-स्वच्छ साड़ी को दूर फेंक। एहि-आओ, स इव-उसकी तरह। पांसुरभूमिम्-मिट्टी वाली धरती पर, जहां मजदूर पसीना बहा रहे हैं।

मुक्तिः क्व सदा– मुक्ति कहां दिखाई दे रही है? ईश्वर ने लीलापूर्वक यह सृष्टि बनाई है। वह तो अस्मद्+हिताभिलाषी=हमारी भलाई चाहने वाला सदा अस्माकं-हमारे सविधे=पास ही तिष्ठति=रहता है। ध्वानं=मार्ग को हित्वा=छोड़कर, तुम सब कुसुम, धूप आदि छोड़कर बाहर आ जाओ=बहिः एहि। स्वेदजलार्द्रः-पसीने से लथपथ, कार्यक्षेत्रे=कार्यक्षेत्र में, उसके पास रहो।

यदि तव– यदि तब वसनम्=वस्त्रम् धूसरितं=धूलिलिप्तं, सहस्राणि छिद्राणि युक्तम्, तेन ते का हानिः (क्षतिः) भवेत्-यदि तेरे वस्त्र धूलिधूसरित हों, हजार-हजार छिद्र वाले हों तो भी उससे तुम्हारी क्या हानि होगी, इदं चित्ते चिन्तय=यह चित्त में विचारो। ईश्वर स्वच्छ वस्त्रों में नहीं, श्रम में है।

इस पाठ में क्रियाएं देखिए

लट् लकारः

भजसे– भज् मध्यम पु. एक.व. (तू भजता है),

अस्ति– है, अस् लट् प्र.पु. ए.व.,

कर्षति– जोत रहा है, कृष्–लट् प्र.पु. ए.व.,

दारयते– तोड़ रहा है। दृ+णिच् आत्मनेपद, प्रथम पु.,

तिष्ठति– रहता है, स्था-लट् प्र.पु. ए.व.,

सृजति– बनाता है, रचता है, सृज्, लट् प्र.पु. ए.व.,

लोट् लकारः

स्फुटय– खोलो, स्फुट् म.पु. ए.व.

त्यज– छोड़ दो, त्यज् म.पु. ए.व.

क्षिप– फेंको, क्षिप् म.पु. ए.व.,

एहि– आ+इ+ आओ

तिष्ठ– स्था म.पु. ए.व. ठहरो।

चिन्तय– सोचो चिन्त् लोट् म.पु. एकव.

विधिलिङ्

स्यात्– होवे अस प्रथम पु. एकव.

भवेत्– होवे भू : प्रथम पु. ए.व.

कृदन्तप्रत्ययाः

दृश्या– दृश्+यत्=देखने योग्य स्त्री. एकवचने,

मिषन्– मिष्+शतृ=पु. प्रथमा एक.व. देखता हुआ

हित्वा– हा+तत्वा=छोड़कर

पश्यन्– दृश्+शतृ पु. प्रथमा एकवचने-देखते हुए (यथा मिषन्)

अव्ययपदानि– न, अत्र (यहां), तत्र (वहां) यत्र (जहां) हि-(निश्चय से), च (और) सार्धम्=साथ (सह के समान तृतीया आती है। दूरे-दूर, इव (समान), क्व=कहां, नु (निश्चय से)। सविधे=पास (समीपे), सदा=हमेशा, सर्वदा, बहिः=बाहर, निकटे=पास।

प्रश्नाः

I. निम्नलिखित में से आज्ञाकालिक (लोट् लकारे प्रयुक्तानि) क्रियापदानि चित्वा अर्थमपि लिखत–
भजसे, त्यज, तिष्ठ, अस्ति, कर्षति, स्फुटय, दारयते, क्षिप, एहि, सृजति, तिष्ठति, चिन्तय।

II. निम्नलिखित पदों को सन्धियुक्त करके लिखिए–

(i) तमोवृत्ते+अस्मिन् --------

(ii) न+अस्ति+अत्र+ईशः --------

(iii) ईशः+तिष्ठति --------

(iv) च+अस्मत्+हिताभिलाषी --------

(v) सविधे+अस्माकम् --------

(vi) बहिः+एहि --------

(vii) पश्यन्+तिष्ठ --------

(viii) तत्+निकटे --------

(ix) क्षतिः+इह --------

(x) स्वेदजल+आर्द्रः --------

III. निम्नलिखित में जो सप्तम्यन्त <u>पद नहीं हैं</u>, उन्हें छांटिए–

देवागारे, अस्मिन्, भजसे, वर्षातपयोः, सविधे, तन्निकटे, ते, चित्ते, दारयते, तिष्ठति।

IV. निम्नलिखितानि अव्ययपदानि वाक्येषु प्रयोजयत–

अत्र, तत्र, यत्र, कुत्र, सर्वत्र।